Paper No.	Course Category	Course Title	Credit	IM	EM	Marks
Paper 354	Minor courses DSC-M-354	संज्ञाप्रकरणम् (वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी) OR रामायणम् – सुन्दरकाण्डम् (नियतांश:)	04	50	50	100

संज्ञाप्रकरणम् (वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी) DSC-M-354-A		
Objectives	**विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण की मूल बातें सिखाना।** → पाठ्यक्रम में वैयाकरण-सिद्धांत-कौमुदी का अध्ययन किया जाएगा। → इससे छात्र संस्कृत की रचना और कार्यप्रणाली समझ सकेंगे। **भारतीय भाषाविज्ञान की प्रारंभिक दृष्टि से परिचय कराना।** → शास्त्रीय वैयाकरणों की पद्धति और दर्शन पर बल दिया गया है। → यह अध्ययन आगे के गहन व्याकरणिक अध्ययन की तैयारी कराता है।	
Unit	Unit-1	भट्टोजि दीक्षित एवं कौमुदी का परिचय, भट्टोजि दीक्षित का जीवन और योगदान। वैयाकरणसिद्धांत कौमुदी का स्वरूप एवं विशेषताएँ, कौमुदी को प्रक्रियाग्रंथ रूप में समझना।
	Unit-2	संज्ञाप्रकरण के प्रमुख सूत्र - भाग 1 (1-16) (सूत्रों की सरल व्याख्या सहित अर्थ व प्रयोग, संज्ञा निर्माण की प्रक्रिया और उसका प्रयोग।)
	Unit-3	संज्ञाप्रकरण के प्रमुख सूत्र - भाग 2 (17–34) (सूत्रों की सरल व्याख्या सहित अर्थ व प्रयोग, संज्ञा निर्माण की प्रक्रिया और उसका प्रयोग।)
	Unit-4	त्रिमुनि (पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि) का संक्षिप्त परिचय। त्रिमुनि (पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि) का संक्षिप्त परिचय। प्रमुख वैयाकरणों (जैसे वामन, जयादित्य, नागेशभट्ट, कैयट, हेमचंद्रसूरि आदि) का संक्षिप्त परिचय।
Learning Outcomes	• **पद पहचान:** पाणिनि व्याकरण में अच्, हल्, गुण जैसे संज्ञा पदों की पहचान करना। • **सूत्र अध्ययन की तैयारी :** अष्टाध्यायी के सूत्रों के अध्ययन हेतु आधार तैयार करना। • **सूत्र शैली की समझ :** संक्षिप्त एवं नियम-आधारित व्याकरणिक शैली को समझना। • **शास्त्रों में उपयोगिता :** अन्य भारतीय ज्ञान परंपराओं में इन पदों के प्रयोग को जानना। • **संरचनात्मक दृष्टि :** संस्कृत शब्दों और वाक्यों की रचना को समझना। • **तार्किक चिन्तन :** व्याकरणिक अनुशासन और तर्कशक्ति का विकास करना।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01. संज्ञाप्रकरणम्; प्रो. वसन्तकुमार म. भट्ट श्री सरस्वती पुस्तक भण्डार, अमदावाद

02. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा व्याख्या तत्वबोधिनी व्याख्या) भाग १ कारकप्रकरणान्ता
सम्पादक श्री गिरिघर शर्मा, परमेश्वरानन्द शर्मा १९७५ प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास

03. अष्टाध्यायी सूत्रपाठः, पदच्छेद-वृत्ति सहितः विवरण, सम्पादक: प्रोफे गोपालदत्त पाण्डेय चोखम्बा, सुरभारती प्रकाशन.

04. व्याકરણ સૂર્યોદય, લેખકઃ પંડિત રમણલાલ દવે, પ્રકાશકઃ ગુજરાત વિદ્યા સભા, અમદાવાદ

05. पाणिनीय संज्ञाप्रकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन, लेखक: डॉ. रमेश चंद्र शुक्ल, प्रकाशक: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

06. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - संज्ञाप्रकरण सहित, लेखक: डॉ. रामनिवास त्रिपाठी, प्रकाशक: मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

07. The Aṣṭādhyāyī of Pāṇini (with English Translation and Notes), Editor/Translator: Srisa Chandra Vasu, Publisher: Motilal Banarsidass Publishers, Delhi

08. Sanskrit Grammar (with focus on Technical Terms like Sañjñās). Author: William Dwight Whitney, Publisher: Harvard University Press

रामायणम् – सुन्दरकाण्डम् (नियतांश:) DSC-M-354-B		
Objectives	• सुंदरकाण्ड की साहित्यिक और आध्यात्मिक विशेषताओं का परिचय कराना। • हनुमान को भक्ति, शक्ति और सेवा के आदर्श रूप में समझना। • चयनित श्लोकों द्वारा संस्कृत काव्य की शैली को समझना। • सुंदरकाण्ड के नैतिक मूल्यों को जीवन प्रबंधन से जोड़ना। • शुद्ध पाठ, अनुवाद और सांस्कृतिक व्याख्या की क्षमता विकसित करना।	
Unit	Unit-1	अध्याय 10, 13, 18, 19, 20, 21 में चयनित श्लोकों का अध्ययन - → भाषागत विशेषताएँ, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार कथा विषय एवं प्रमुख पात्रों की चर्चा।
	Unit-2	अध्याय 26, 30, 31, 38, 39, 45 में चयनित श्लोकों का अध्ययन - → श्लोकों की भाषा-शैली, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार कथानक तथा चरित्रों का विश्लेषण।
	Unit-3	अध्याय 46, 48, 49, 50, 51 के श्लोकों का अध्ययन - → भाषिक संरचना, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार प्रसंगों की व्याख्या एवं पात्रों की भूमिका पर चर्चा।
	Unit-4	रामायण की कथा का काण्डों के अनुसार विवरण, महर्षि वाल्मीकि का जीवन-वृत्त, सुंदरकाण्ड का सारांश। रामायण के संशोधित संस्करणों का इतिहास व सिद्धांत, रामायण पर आधारित साहित्य व दृश्यकलाएँ (फिल्में, धारावाहिक, नाटक)।
Learning Outcomes	• कथा की समझ: हनुमान की यात्रा तथा सीता से भेंट जैसे प्रमुख घटनाक्रमों की स्पष्ट समझ विकसित होगी। • चरित्र-दृष्टि: हनुमान के भक्ति, साहस एवं बुद्धिमत्ता जैसे गुणों की पहचान कर सकेंगे। • भाषा-कौशल: चयनित श्लोकों का शुद्ध पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या करने की क्षमता प्राप्त होगी। • दार्शनिक मूल्य: धर्म, सेवा एवं भक्ति जैसे जीवन-मूल्यों को समझ सकेंगे। • व्यावहारिक उपयोग: इन शिक्षाओं को आत्मविकास एवं मानसिक दृढ़ता में लागू कर सकेंगे	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)
11. रामायणम् - सुन्दरकाण्डम् संपादक: प्रो. पी. सी. दवे एवं अन्य प्रकाशक: सरस्वती पुस्तक भंडार, अहमदाबाद
12. रामायणम् - सुन्दरकाण्डम् - संपादक: प्रो. विजय पंड्या - प्रकाशक: पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद
13. શ્રીમદ્વાલ્મીકિ રામાયણ — સુંદરકાંડ (અનુવાદ અને ટિપ્પણીઓ સાથે) સંપાદક: દયારામ દેસાઈ પ્રકાશક: ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી
14. સુંદરકાંડ (સહજ ભાષામાં અર્થ સાથે) લેખક: મોરારિબાપુ પ્રવચન આધારિત સંપાદન પ્રકાશક: તુલસીપ્રકાશન ટ્રસ્ટ, તળગાજરડા
15. वाल्मीकि रामायण - सुंदरकांड (हिन्दी अनुवाद सहित) प्रकाशक: गीता प्रेस, गोरखपुर
16. सुंदरकांड - भावार्थ व व्याख्या सहित, लेखक/संपादक: पं. रामकिंकर उपाध्याय, प्रकाशक: चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
17. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् - सुन्दरकाण्डः (टीकासहित) सम्पादक: स्वामी द्वारिकाश्रम, प्रकाशक: चौखम्बा संस्कृत सीरीज
18. Valmiki Ramayana - Sundarakanda, Editor: Bibek Debroy, Publisher: Penguin Books India
19. The Ramayana of Valmiki Vol V ,Sundarkanda ,Ed. by Robert Goldman,First indian Edition 1999.
20. Sundarakanda: The Triumph of Devotion and Courage, Author: Swami Tejomayananda Publisher: Central Chinmaya Mission Trust (CCMT), Mumbai

Paper No.	Course Category	Course Title	Credit	IM	EM	Marks
Paper 355	Minor courses DSC-M-355	सांख्यकारिका OR महाभारत – विराटपर्व (नियतांश:)	04	50	50	100

सांख्यकारिका DSC-M-355-A		
Objectives	• भारतीय दर्शन की मूलभूत दृष्टि को सांख्य दर्शन के माध्यम से समझाने का उद्देश्य। • संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा से विद्यार्थियों को परिचित कराना। • प्रकृति, पुरुष एवं त्रिगुण जैसी सांख्य दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं की सम्यक् समझ प्रदान करना। • पारंपरिक भारतीय और आधुनिक दार्शनिक विचारों के बीच तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।	
Unit	Unit-1	**कारिका 1 से 15 तक** • कारिका का अनुवाद, भावानुवाद और अर्थविस्तार। • सांख्य दर्शन की उत्पत्ति, उद्देश्य एवं अध्ययन की पद्धति का परिचय। • दुःख का स्वरूप, पुरुष की आवश्यकता तथा तत्वचिंतन का आरंभ।
	Unit-2	**कारिका 16 से 30 तक** • कारिका का अनुवाद, भावानुवाद और अर्थविस्तार। • प्रकृति, गुणत्रय (सत्त्व, रजस्, तमस्) की व्याख्या। • कार्यकारण सिद्धांत (सत्कार्यवाद) एवं सृष्टि प्रक्रिया का विवेचन।
	Unit-3	**कारिका 31 से 45 तक** • कारिका का अनुवाद, भावानुवाद और अर्थविस्तार। • पुरुष का स्वरूप, उसकी स्वतंत्रता एवं प्रकृति से भिन्नता। • कैवल्य (मोक्ष) की अवधारणा एवं उसे प्राप्त करने के उपाय।
	Unit-4	**सांख्य दर्शन पर तात्त्विक विचार** • अन्य दर्शनों के साथ तुलनात्मक अध्ययन। • सांख्य सिद्धांतों की आधुनिक जीवन एवं प्रबंधन में प्रासंगिकता।
Learning Outcomes	• प्रकृति, पुरुष, गुण, सत्कार्यवाद और मोक्ष जैसी सांख्य की मूल अवधारणाएँ समझ सकेंगे। • सांख्यकारिका के श्लोकों का अध्ययन कर शास्त्रीय व्याख्या और अर्थ ग्रहण कर सकेंगे। • सांख्य दर्शन का स्थान और योगदान जान सकेंगे तथा अन्य दर्शनों से तुलना कर सकेंगे। • तत्व, ज्ञान और मोक्ष संबंधी चिंतनशील दृष्टिकोण विकसित होगा। • मानसिक संतुलन, विवेक और आत्मनिष्ठा जैसे जीवन मूल्यों से सांख्य सिद्धांत की प्रासंगिकता समझ सकेंगे।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01 સાંખ્યકારિકા, લેખક - ડો. જીતેન્દ્ર જેટલી, ડો. વસંત પરીખ, પ્રકાશક: સરસ્વતી પ્રકાશન, અમદાવાદ

02 સાંખ્યકારિકા, લેખક - ડો. જીતેન્દ્ર દેસાઈ, પ્રકાશક: પાર્શ્વ પ્રકાશન, અમદાવાદ

03 સાંખ્ય-યોગ (ષડ્દર્શન – પ્રથમ ખંડ), લેખક - શ્રી નગીન શાહ, પ્રકાશક: ગુજરાત યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, અમદાવાદ

04 ભારતીય દર્શન (ષડ્દર્શનો), લેખક - ડો. સી.વી. રાવળ, પ્રકાશક: પ્રજ્ઞા પ્રકાશન, અમદાવાદ

05 સાંખ્યકારિકા - સંપાદક - ડૉ. રવિન્દ્ર ખાંડવાલા, નીરવપ્રકાશન, અમદાવાદ

06 भारतीय दर्शन, लेखक: सर्वपल्ली राधाकृष्णन, प्रकाशक: राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

07 भारतीय दर्शन - (सरल परिचय), लेखक: कृष्णकुमार दीक्षित, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
08 भारतीय दर्शन का इतिहास (भाग 1-5), लेखक: एस. एन. दासगुप्ता, प्रकाशक: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
09 Classical Sāṅkhya: An Interpretation of Its History and Meaning. Author: Gerald James Larson Publisher: Motilal Banarsidass, Delhi
10 The Sāṅkhya Kārikā of Īśvarakṛṣṇa: A Translation and Commentary, Author: Swami Virupakshananda Publisher: Sri Ramakrishna Math, Chennai

महाभारत – विराटपर्व (नियतांश:) DSC-M-355-B		
Objectives	• विद्यार्थियों को महाभारत के विराटपर्व की कथा की प्रमुख घटनाओं से परिचित कराना। • पाण्डवों के अज्ञातवास की परिस्थितियों और उनके चरित्र की विशेषताओं को समझना। • विराटपर्व में निहित नीति, धैर्य, साहस, सेवा और धर्म जैसे मूल्यों का अध्ययन कराना। • संस्कृत गद्य/पद्य के माध्यम से भाषा-कौशल, अनुवाद और व्याख्या की क्षमता का विकास करना। • आधुनिक जीवन में विराटपर्व के नैतिक संदेशों को अपनाने हेतु प्रेरित करना।	
Unit	Unit-1	विराटपर्व - अध्याय 1, 4, 6, 7 और 8 → इन अध्यायों के प्रमुख श्लोकों का अध्ययन, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार। → कथावस्तु, पात्रों का चरित्र-विश्लेषण एवं भाषागत विशेषताएँ।
	Unit-2	विराटपर्व - अध्याय 9, 10, 11, 13 और 14 → श्लोकों की व्याख्या, भावार्थ एवं संवादों का अध्ययन, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार। → नीति एवं सामाजिक मूल्य पर चिंतन।
	Unit-3	विराटपर्व - अध्याय 15, 16, 17, 19, 20, 21 → श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार। → घटनाक्रम, संवाद, नीति, युद्धकला एवं पात्रों की भूमिका का विश्लेषण।
	Unit-4	→ महाभारत के प्रारंभिक दस पर्वों की कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय। → महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास का जीवन एवं साहित्यिक योगदान। → महाभारत के तीन प्राचीन रूपों - जय, भारत, महाभारत का संक्षिप्त विवरण। → महाभारत के वर्तमान स्वरूप की विशेषताओं का अध्ययन।
Learning Outcomes	• विद्यार्थी विराटपर्व की कथा और प्रमुख घटनाओं को समझ सकेंगे। • पाण्डवों के अज्ञातवास और उनके व्यवहारिक बुद्धि व धैर्य का विश्लेषण कर सकेंगे। • धर्म, नीति, शौर्य और सेवा जैसे मूल्यों को पहचान सकेंगे। • संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण, अनुवाद और अर्थ स्पष्ट रूप से कर सकेंगे। • आधुनिक जीवन में प्रस्तुत मूल्यों की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01 મહાભારત - સંપાદક: દિનકર જોષી, પ્રકાશક: પ્રવિણ પ્રકાશન, રાજકોટ

02 મહાભારતના પાત્રો, લેખક: નાનાભાઈ ભટ્ટ, પ્રકાશક: આર.આર. શેઠ એન્ડ સન્સ, અમદાવાદ

03 विराटपर्व, संपादक - शांतिकुमार पंड्या, प्रकाशक: पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद

04 महाभारत (भाग 1-6), प्रकाशक: गीताप्रेस, गोरखपुर

05 भारतीय महाकाव्य: महाभारत - एक अध्ययन, लेखक: डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, प्रकाशक: साहित्य भवन, आगरा

06 महाभारत का सांस्कृतिक अध्ययन, लेखक - डॉ. रमेशचंद्र शुक्ल, प्रकाशक: चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी

07 The Mahabharata (Complete English Translation), Translator: Kisari Mohan Ganguli, Publisher: Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi

08 The Mahabharata: A Modern Rendering (Vol. 1 & 2), Author: Ramesh Menon. Publisher: Rupa Publications, New Delhi

09 The Essence of the Mahabharata, Author: C. Rajagopalachari, Publisher: Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai